भारतीय ज्ञान प्रणाली
उद्गम और विकास

सम्पादक :
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

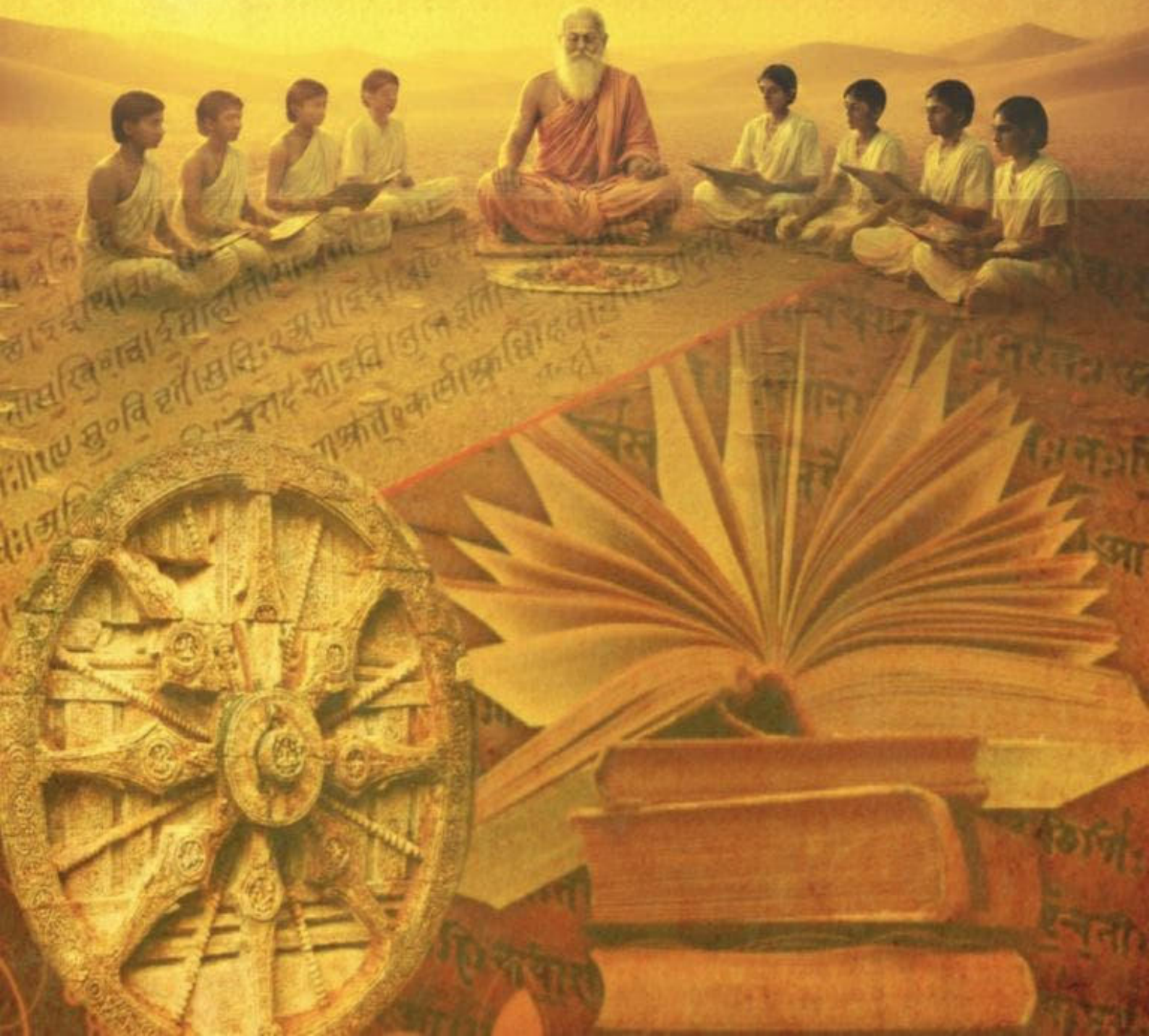

भारतीय ज्ञान प्रणाली
उद्‌गम और विकास

सम्पादक :

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

Books n Books

51/1509, आचमन, वेदविहार,
लोहाखान, अजमेर-305001

प्रकाशक :

पुष्पा शर्मा

Books n Books

51/1509, आचमन, वेदविहार,

लोहाखान, अजमेर-305001

ई-मेल : bnbajmer@gmail.com

मो. 9660111549

संस्करण

प्रथम 2026

***ISBN :* 978-81-993854-1-2**

मूल्य - 400/-

रचना - भारतीय ज्ञान प्रणाली-उद्गम और विकास

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

आवरण - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

मुद्रक

श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

11

भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा का स्वरूप

कमलेश कुमार अटल
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा का स्वरूप अत्यंत विस्तृत और समग्र दृष्टि वाला रहा है। वेदों के अध्ययन और उनके अर्थबोध के लिए विकसित छह प्रमुख शास्त्रों को 'वेदांग' कहा गया। ये वेदांग न केवल ज्ञान की विशिष्ट शाखाएँ हैं, बल्कि वेदों को समझने और उनका सही प्रयोग करने के लिए आवश्यक उपकरण भी हैं। वेदाङ्गों की संख्या और प्रकार इस प्रकार हैं: शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, और ज्योतिष। प्रत्येक वेदांग का वेद के अध्ययन और जीवन में विशिष्ट महत्व है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल अक्षर ज्ञान नहीं बल्कि उच्चस्तरीय बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास है। पाणिनीय-शिक्षा में इन छह अंगों की उपमा वेदारूपी पुरुष के अंगों से दी गई है, जिससे उनके सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक महत्व की गहरी समझ मिलती है। जैसे कि छन्दशास्त्र को वेद के पादों के समान माना गया है, जो वेद की गति और संरचना को दर्शाता है; कल्प-शास्त्र वेद के हाथ के समान है, जिसका प्रयोग व्यावहारिक रूप में होता है; ज्योतिष नेत्र के समान है, निरुक्त श्रोत्र के समान, शिक्षा घ्राण के समान और व्याकरण मुख के समान महत्व रखता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो, ये शास्त्र वेदार्थ-ज्ञान में शरीर के विभिन्न अंगों की भाँति प्रत्यक्ष सहायक और उपयोगी हैं।

वेदांगीय अध्ययन का लाभ केवल मोक्ष-सुख तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सांसारिक जीवन में सफलता और सम्पूर्ण सुख प्राप्त करने में भी सहायक है। शिक्षा-शास्त्र में स्पष्ट किया गया है कि सही प्रकार से प्रयुक्त शब्द और ज्ञान मनुष्य को संसार के सभी सुखों एवं मुक्ति-सुख से युक्त कर देता है। यही कारण है कि महर्षि पतञ्जलि ने ब्राह्मण के कर्तव्य के रूप में कहा है कि वेद का अध्ययन निष्काम भाव से, छः अङ्गों सहित किया जाना चाहिए, न कि प्रतिफल की आकांक्षा के लिए।

वेदांगों की प्राचीनता :

वेदांगों की प्राचीनता भारतीय ज्ञान परम्परा में अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये

वेदों के अध्ययन और उनके अर्थबोध का आधार हैं। इनका उद्भव और विकास विभिन्न कालों में आवश्यकतानुसार हुआ, परन्तु विद्वानों ने अभी तक इनके सटीक समय का निर्धारण नहीं किया है। इसकी कालसीमा विवादास्पद होने के बावजूद, अति प्राचीन ग्रन्थों में वेदाङ्गों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है, जिससे उनकी प्राचीनता प्रमाणित होती है।

उदाहरण स्वरूप, मुण्डकोपनिषद् (1/1/5) में वेदों के साथ वेदांगों —शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष—का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार, छान्दोग्य उपनिषद् (8/3/3) में निरुक्त का उल्लेख हृदय में स्थित आत्मा से संबंधित बताया गया है। प्राचीन महाकाव्यों और ग्रन्थों जैसे बाल्मीकि रामायण (बालकाण्ड 14-21), किष्किन्धा (3-26) और महाभारत के शान्ति पर्व (284-82) तथा उद्योग पर्व (42-60) में भी व्याकरण और अन्य वेदांगों का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त, गोपथ ब्राह्मण पूर्वार्द्ध (1-27) और प्रस्थानभेद में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि वेदांग षट् हैं।

इन प्रमाणों से यह स्पष्ट होता है कि वेदाङ्ग केवल वेदों के अध्ययन का सहायक उपकरण नहीं, बल्कि भारतीय शास्त्रीय ज्ञान की प्राचीनतम शाखाएँ हैं, जिन्हें विद्वानों ने वैदिक युग से ही महत्वपूर्ण माना। इन शास्त्रों के अस्तित्व और उपयोग से यह समझा जा सकता है कि वेदाङ्गीय शिक्षा न केवल ज्ञानार्जन का माध्यम रही, बल्कि संस्कृत और वेदीय साहित्य की संरचना और संरक्षण का आधार भी रही।

शिक्षा :

भारतीय ज्ञान परम्परा में 'शिक्षा' वेदांगों में से प्रथम और अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। 'शिक्षा' शब्द की व्युत्पत्ति 'शिक्ष विद्योपादाने' से हुई है, जिसमें धातु 'शिक्ष' पर 'अ' और तत्पश्चात 'टाप्' प्रत्यय लगाकर यह शब्द बना। इसका अर्थ है—स्वरों और वर्णों के उच्चारण की विधि सिखाने वाला शास्त्र। यह केवल किसी भी विषय के शिक्षण-ग्रन्थ का नाम नहीं है, बल्कि विशेष रूप से वर्णों के उच्चारण, स्वर, मात्रा, बल, स्थान, प्रयत्न और घोषवत्त्व से संबंधित शास्त्र है।

'शिक्षा' का उद्देश्य केवल शब्द ज्ञान नहीं, बल्कि वेदों के सही उच्चारण और स्वररूप ज्ञान के माध्यम से उन्हें समझने और ग्रहण करने में सहायक होना है। तैत्तिरीयोपनिषद् में शिक्षा के स्वरूप को इस प्रकार वर्णित किया गया है—वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम और सन्तान। यह शास्त्र अकारादि वर्णों, उदात्त और हस्व स्वर, मात्रा, कण्ठादि स्थान, स्पृष्ट तथा आभ्यन्तर प्रयत्न, घोषवत्त्व, माधुर्य और दोषों का सम्यक् विवेचन कर वेदार्थ को सुलभ बनाता है।

विभिन्न शिक्षा-ग्रन्थः

वर्तमान समय में 100 से अधिक शिक्षा सम्बन्धी ग्रन्थ ज्ञात हैं, जिनमें से लगभग 40 मुद्रित हो चुके हैं और शेष संग्रहालयों में हस्तलेख रूप में सुरक्षित हैं। 2040 वि.सं. में सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्रकाशित 'शिक्षा-संग्रह' में 31 प्रमुख शिक्षा ग्रन्थों का संग्रह किया गया, जिनमें याज्ञवल्क्य शिक्षा, वासिष्ठी शिक्षा, कात्यायनी शिक्षा, पाराशरी शिक्षा, माण्डवी शिक्षा, अमोघनन्दिनी शिक्षा, माध्यन्दिनी शिक्षा, पाणिनीय शिक्षा आदि शामिल हैं।

प्रातिशाख्य ग्रन्थः

वैदिक शाखाओं में शिक्षा, छन्द और व्याकरण सम्बन्धी नियमों का उल्लेख करने वाले ग्रन्थ प्रातिशाख्य कहलाते हैं। इन ग्रन्थों में भी शिक्षा-सम्बन्धी विषयों का विस्तृत विवेचन मिलता है। प्रमुख प्रातिशाख्य-ग्रन्थों में ऋक् प्रातिशाख्य, वाजसनेयि (शुक्ल यजुः) प्रातिशाख्य, तैत्तिरीय (कृष्ण यजुः) प्रातिशाख्य, तथा सामवेदीय प्रातिशाख्य (पुष्पसूत्र, ऋक्तन्त्र, सामतन्त्र) शामिल हैं।

इस प्रकार, शिक्षा वेदांग केवल वर्ण-ज्ञान और उच्चारण का शास्त्र नहीं है, बल्कि यह वेदों के अध्ययन का मूल आधार और ब्रह्मविद्या में प्रवेश का प्रथम चरण है। इसकी प्रणाली और ग्रन्थों की विशालता इस बात का प्रमाण है कि भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा का स्थान अत्यंत प्राचीन और महत्त्वपूर्ण रहा है।

भारतीय वेदांग परम्परा में शिक्षा का महत्व केवल स्वर और वर्णों के सही उच्चारण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके ग्रन्थ और शाखाएँ स्वयं वैदिक विद्वान् समाज की ऐतिहासिक परंपरा और ज्ञान संरचना को दर्शाती हैं। इस समय उपलब्ध शिक्षा-ग्रन्थों में अधिकांश ग्रन्थ वेद की विभिन्न संहिताओं और शाखाओं से संबंधित हैं, किन्तु लोक और वेद से वर्णोच्चारण सम्बन्धी सीधे ग्रन्थ इस समय केवल तीन हैं—आपिशल-शिक्षा, पाणिनीय-शिक्षा, और चान्द्र-शिक्षा।

(1) आपिशल-शिक्षा :- यह शिक्षा-ग्रन्थ महामुनि आपिशलि द्वारा रचित है। आचार्य पाणिनि ने अपने सूत्र 'वा सुप्यापिशलेः' (अष्टाध्यायी 6-1-76) में आपिशलि का प्रत्यक्ष उल्लेख किया है, जिससे स्पष्ट होता है कि आपिशलि पाणिनि से पूर्ववर्ती हैं। आपिशल-शिक्षा के सूत्र, पाणिनीय-शिक्षा के सूत्रों के समान हैं, किन्तु इनमें कुछ भिन्नताएँ भी विद्यमान हैं। इस ग्रन्थ का महत्व इस दृष्टि से है कि यह वेदों के उच्चारण और वर्णविधान के प्रारंभिक परंपरागत स्वरूप का प्रतिपादन करता है।

(2) पाणिनीय-शिक्षा :- पाणिनीय-शिक्षा के इस समय दो प्रकार के पाठ उपलब्ध हैं—सूत्रात्मक और श्लोकात्मक। वर्तमान में अधिकांश संग्रहों में श्लोकात्मक

पाणिनीय-शिक्षा ही संकलित है, जिसे वेदाङ्ग के रूप में कई विद्वानों ने मान्यता दी है। इसका प्रथम श्लोक स्पष्ट करता है कि यह श्लोकात्मक शिक्षा मूल रूप से पाणिनि द्वारा प्रत्यक्ष रचित नहीं है, बल्कि किसी अन्य ने पाणिनीय-मत के अनुसार तैयार किया। 'प्रकाश' नामक टीका के अनुसार इसका प्रवक्ता पाणिनि का अनुज आचार्य पिङ्गल है।

इस प्रकार, श्लोकात्मक पाणिनीय-शिक्षा मूल सूत्रात्मिका पाणिनीय-शिक्षा पर आधारित है। यह स्थिति अन्य शिक्षा-ग्रन्थों में भी देखने को मिलती है—विशिष्ट ऋषियों या मुनियों के नाम से ग्रन्थ रचे गए, किन्तु उनका वास्तविक लेखक कोई अन्य विद्वान् होता था। उदाहरण स्वरूप:

* **वासिष्ठी शिक्षा:** 'अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि वासिष्ठस्य मतं यथा।
* **लघुमाध्यन्दिनीया शिक्षा:** 'अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि माध्यन्दिनमतं यथा।'
* **पाराशरी शिक्षा:** 'अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि पाराशरमतं यथा।'
* **माण्डवी शिक्षा:** 'अथात: संप्रवक्ष्यामि शिष्याणां हितकाम्यया। माण्डव्येन यथा प्रोक्तां ओष्ठ यसंख्या समाहृता:।'

इस प्रकार देखा जाए तो शिक्षा-ग्रन्थ केवल वर्णोच्चारण और स्वरशास्त्र तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे वैदिक परंपरा और विद्वानों की ऐतिहासिक संप्रेषण प्रणाली को भी संरक्षित करते हैं। प्रत्येक ग्रन्थ ने विशेष ऋषि या मुनि के मत का प्रचार और संरक्षण किया, जिससे वेदों के अध्ययन और अनुशीलन में सतत् परंपरा बनी रही।

भारतीय वेदांग शिक्षा के अध्ययन में सूत्रात्मक ग्रन्थों का महत्त्व अत्यंत उच्च है, क्योंकि ये वेदों के सही उच्चारण और स्वरशास्त्र की मूल परंपरा का संरक्षण करते हैं। वर्तमान समय में तीन प्रमुख सूत्रात्मक शिक्षा-ग्रन्थ उपलब्ध हैं—आपिशल-शिक्षा, पाणिनीय-शिक्षा, और चान्द्र-शिक्षा।

सूत्रात्मक पाणिनीय-शिक्षा :- श्लोकात्मक पाणिनीय-शिक्षा का पठन-पाठन अधिक होने के कारण सूत्रात्मक पाठ लगभग लुप्त हो चुका था और हस्तलेख भी दुर्लभ थे। इस तथ्य की ओर सबसे पहले स्वामी दयानन्द सरस्वती का ध्यान गया। उन्होंने मूल सूत्रात्मक पाणिनीय-शिक्षा प्राप्त करने के लिए गहन प्रयास किया। अंतत: सन् 1879 (वि.सं. 1936) में प्रयाग के एक ब्राह्मण के घर से इसका एक अधूरा हस्तलेख मिला। यह खोज शिक्षा-शास्त्र के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसे आर्यभाषा में व्याख्या सहित प्रकाशित किया और 'वर्णोच्चारण-शिक्षा' के नाम से समाज के अध्ययन हेतु प्रस्तुत किया।

चान्द्र-शिक्षा :- आचार्य चन्द्रगोमि, जो प्रसिद्ध बौद्ध वैयाकरण थे, ने कश्मीर

के महाराज अभिमन्यु के आदेश से नष्टप्राय महाभाष्य का उद्धार किया। उनके द्वारा रचित 'चान्द्र-शिक्षा' में 51 सूत्र हैं। इस ग्रन्थ ने वेदों के उच्चारण और शिक्षा-शास्त्र की प्रणाली में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संपादन और प्रकाशन :- महामहोपाध्याय पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने इन तीनों सूत्रात्मक शिक्षा-ग्रन्थों का विभिन्न पाठ भेदों सहित सम्पादन किया। इसका प्रकाशन रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ से 'शिक्षा-सूत्राणि' के नाम से हुआ। इस प्रकार, सूत्रात्मक शिक्षा-ग्रन्थों के माध्यम से वैदिक उच्चारण की मूल परंपरा और वेदांगीय ज्ञान का संरक्षण सुनिश्चित हुआ।

निष्कर्षत: भारतीय वेदांग शिक्षा वेदों के सही उच्चारण, स्वर और वर्णज्ञान का आधार है और वेदाङ्ग का प्रथम अंग माना जाता है। इसके अध्ययन से व्यक्ति वेदों को सम्यक् रूप से ग्रहण कर जीवन में मोक्ष और सांसारिक लाभ प्राप्त करता है। वेदाङ्गों की प्राचीनता मुण्डकोपनिषद्, छान्दोग्य उपनिषद्, रामायण और महाभारत में स्पष्ट है।

वर्तमान में शिक्षा-ग्रन्थों में प्रमुख हैं आपिशल-शिक्षा, पाणिनीय-शिक्षा और चान्द्र-शिक्षा। आपिशलि द्वारा रचित आपिशल-शिक्षा पाणिनि से पूर्ववर्ती है। पाणिनीय-शिक्षा के श्लोकात्मक पाठ मूल पाणिनि द्वारा नहीं रचे गए थे; स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सूत्रात्मक पाठ का उद्धार कर इसे 'वर्णोच्चारण-शिक्षा' के नाम से प्रकाशित किया। चान्द्र-शिक्षा आचार्य चन्द्रगोमि द्वारा रचित 51 सूत्रों वाला ग्रन्थ है। प्रातिशाख्य ग्रन्थों में भी शिक्षा सम्बन्धी नियमों का विस्तृत विवेचन मिलता है।

☆☆☆